कर्म सिद्धांत की वर्तमान में प्रासंगिकता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आत्मा और पुद्गल का संयोग कर्म को उत्पन्न करता है। मानव एक क्षण भी बिना कर्म किये नहीं रह सकता। वह प्रतिक्षण मानसिक या शारीरिक कर्म करता रहता है। कर्म करने से भावों के अनुकूल परमाणु आकर्षित होकर आत्मा में चिपकते हैं। यह प्रक्रिया कर्म बद्धता की प्रक्रिया है। कर्म ही पूजा है। जो लोग कर्म में विश्वास करते हैं वे जीवन का साध्य प्राप्त कर लेते हैं। पुरुषार्थ करने से सफलता मिलती है। गीता में कर्म मार्ग की शिक्षा दी गई है। अर्जुन के मोहग्रस्त हो जाने पर भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें क्षत्रिय धर्म का स्मरण कराया। कर्म मार्ग पर चलकर कर्तव्य कर्म करने से बंधन नहीं होता। कर्म निष्काम भावना से किया जाना चाहिए। कर्म सही दिशा में किया जाना चाहिए। हर व्यक्ति पुरुषार्थ करता है। उस कर्म की पीछे एक सिद्धान्त होना चाहिए, वह कर्म निष्काम भावना से होना चाहिए। कर्म को फल की इच्छा से नहीं करना चाहिए। फल की इच्छा के बिना किया गया कर्म कष्टदायी नहीं होता। फल की प्राप्ति हमारे हाथ में नहीं है।

कोई भी कर्म पॉच कारणों से होता है– काल, स्वभाव, कर्म, पुरुषार्थ और नियति के योग से कोई कर्म सम्पन्न होता है। काल का अर्थ है समय। किसी विद्यार्थी को 10 की कक्षा देनी है तो एक निश्चित उम्र होनी चाहिए, उसमें योग्यता होनी चाहिए, उसे पुरुषार्थ करना चाहिए। भाग्य और पुरुषार्थ एक–दूसरे में बदलते रहते हैं। अच्छा पुरुषार्थ पुण्य एवं बुरा पुरुषार्थ पाप प्रदान करता है। जो जैसा कर्म करता है, उसको वैसा फल मिलता है। भाग्य और पुरुषार्थ एक सिक्के के दो पहलू हैं। नियति का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। कर्म करना मनुष्य पर निर्भर है उसका फल मिलना नियति पर निर्भर है। कई बार ऐसा होता है कि हमारी दिशा ठीक है किन्तु नियति के कारण कुछ त्रुटि आ गयी। कभी–कभी योग्य विद्यार्थी सफल नहीं हो पाता और कम योग्य को सफलता मिल जाती है। यह नियति का खेल है। व्यक्ति में पूरी

योग्यता है। पार्टी के सदस्य उसको उच्च पद पर बैठाना चाहते हैं, किन्तु कोई बाधा प्रस्तुत हो गयी तो मानना चाहिए कि यह नियति का खेल है। इसलिए कर्म करना व्यक्ति के हाथ में है और फल मिलना ईश्वर के हाथ में है।

कर्तव्य भावना से कर्म करना चाहिए। सृष्टि के संचालन में अनेक कारण हैं, किन्तु जब करने वाला अपने को मान लेता है कि मैने किया तो यह अनुचित है। कार्य का होना एक संयोग है। कर्तापन भी संयोग में एक कारण है। कर्तव्य भावना से किया गया कर्म निष्काम भावना से कर्म योग हो जाता है। हानि–लाभ, जीवन–मरण, सुख–दुख यह ईश्वर के हाथ में है। बहुत परिश्रम करने के बाद भी सफलता का न मिलना और कम कर्म करने पर भी सफलता मिल जाना यह बताता है कि एक तीसरी अदृश्य शक्ति है जो व्यक्ति को संचालित करती हैं वही ईश्वर है। कर्म आत्म पवित्रता के लिए करना चाहिए। संसार की सभी उपलब्धियॉ यहीं छूट जाती है। यहॉ तक की शरीर भी यहीं छूट जाता है। केवल कर्म ही जीव के साथ जाता है। इसलिए निष्काम कर्म करना चाहिए।

निष्काम कर्म का तात्पर्य है ऐसा कर्म जिसे बिना किसी लालसा, बिना किसी कामना और फल की इच्छा किये बिना किया जाये। ऐसा कर्म निष्काम कर्म कहलाता है। कामना पूर्वक किया गया कर्म बंधन का कारण होता है। फल की इच्छा का त्याग कर जो कर्म किया जाता है वह बंधन का कारण नहीं होता, क्योंकि यह कर्म आसक्त रहित है। श्रीमद्भगवत्गीता का मूल सार ही निष्काम कर्म योग है। कर्ममार्ग का तात्पर्य है जीवन में कर्म करो, किन्तु कर्मफल की इच्छा मत करो। कर्मफल की इच्छा करने से यदि मनोनुकूल फल की प्राप्ति नहीं होती तो प्राणी को दुःख होता हैं, इसलिए फल का त्याग करके कर्म करना चाहिए।

जीवन में निराशा का भाव नहीं लाना चाहिए। चारों आश्रमों, पुरुषार्थ चतुष्टय इत्यादि में कर्म करने की ही प्रेरणा दी गई है। जो भी कार्य किया जाये वह कर्ता बुद्धि से नहीं बल्कि ईश्वर को समर्पित करके किया जाता है। गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो व्यक्ति मुझको सर्वत्र और सभी प्राणियों में मुझको देखता है, वह मेरे लिए नहीं मरता और मैं भी उसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहता हूं। यह सम्पूर्ण संसार धागे में मनके की भांति मुझमें पिरोया हुआ है।

भारतीय संस्कृति में कर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान है। संसार में सर्वत्र सुख–दुःख, हानि–लाभ, जीवन–मरण, दरिद्रता–सम्पन्नता, रूग्णता–स्वस्थता और बुद्धिमत्ता–अबुद्धिमत्ता आदि वैभिन्य स्पष्टरूप से दिखायी पड़ता है। यह वैभिन्य दृष्टकारणों से ही हो आवश्यक नहीं, कारण कि ऐसे बहुत सारे उदाहरण प्राप्त होते हैं कि एक माता–पिता के एक साथ जन्मे युग्म बालकों की शिक्षा–दीक्षा, लालन–पालन आदि समान होने पर भी व्यक्तिगत रूप से उनकी परिस्थितियां भिन्न–भिन्न होती हैं, जैसे कोई रुग्ण कोई स्वस्थ, कोई दरिद्र तो कोई सम्पन्न, कोई अंगहीन तो कोई सुन्दर अंगवाला। इन बातों से यह स्पष्ट है कि जन्मान्तरीय धर्माधर्मरूप अदृष्ट भी इन भोगों का कारण है। सभी प्रकार के वैषम्य का मूलकारण कर्म ही है। कर्म से ही मनुष्य सुख–दुःख प्राप्त करता है। वर्तमान युग में कर्म ही किसी व्यक्ति समाज या राष्ट्र के भाग को बदल सकता है।